ISSN-0975-6787

SHODH-SAMIKSHA

Journal of Research and Review

Vol.-V No.-II July-December, 2013

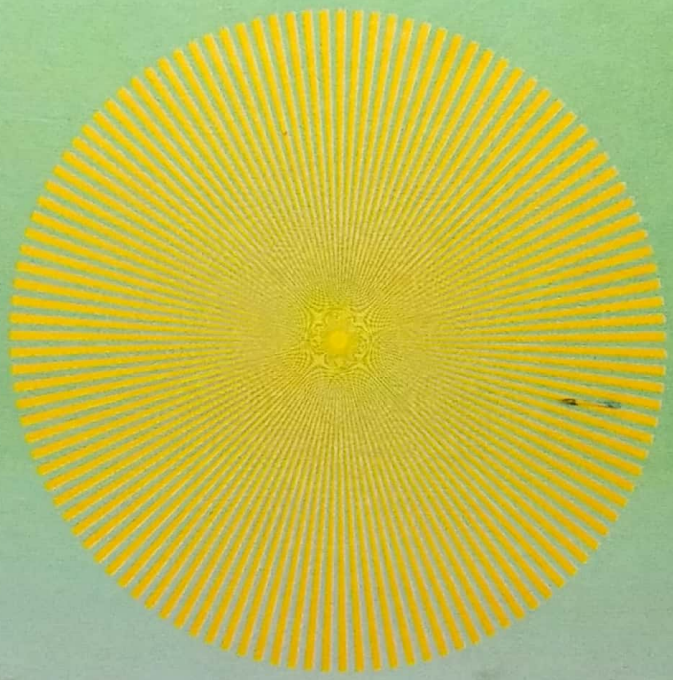

Published Bi-annually by

SOCIAL DEVELOPMENT RESEARCH COUNCIL

Muzaffarpur

Scanned by CamScanner

SHODH-SAMIKSHA : JOURNAL OF RESEARCH AND REVIEW
Vol. V / No.-II / July-December, 2013
ISSN-0975-6787

पंचतत्त्व के साथ नृत्य कला की भूमिका

डॉ. रंजना सरकार
अन्तर्राष्ट्रीय कत्थक नृत्यांगना
पड़ाव पोखर, लेन नं.-2, आमगोला, मुजफ्फरपुर

पंचतत्त्व के साथ नृत्य-कला का संबंध

शास्त्रीय नृत्य अपने पूर्ण आध्यात्मिक स्वरुप में सीधे पंचतत्त्वों से जुड़ा होता है। देवाधिदेव शिव, पंचतत्त्वों से निर्मित मानव-शरीर के साथ संबंध बताते हुए पार्वती से कहते हैं :-

'पंचतत्त्वमये देहे पंचतत्वानि सुन्दरिं
सूक्ष्मरुपेण वर्तन्ते ज्ञायन्ते तत्त्व योगिभि:''

आर्थात् हे पार्वती पाँच तत्वों से बने हुए शरीर में पाँचों तत्त्व सूक्ष्म रुप से विद्यमान रहते हैं, जिनका ज्ञानतत्त्व ज्ञानियों को ही होता है। इस पृथ्वी की उत्पत्ति सूर्य से हुई है। इस कारण मनुष्यमात्र के शरीर में सूर्य का अंश विद्यमान है। सूर्य, उससे उत्पन्न पूथ्वी और पृथ्वी से निर्मित मनुष्य का शरीर, इन तीनों का क्रम नृत्य के महत्त्वपूर्ण आधार है। डॉ0 जयचन्द्र शर्मा ने नृत्य-कला के साथ पंचतत्त्व के संबंधों की व्याख्या करते हुए लिखा है-''कत्थक-नृत्य का कलाकार मंच पर उपस्थित होते ही दाहिने हाथ को ऊपर अर्थात् सूर्य की तरफ और बाँये हाथ को पृथ्वी की तरफ रखता है। उसकी प्रथम मुद्रा अग्नि और पृथ्वी के तत्त्वों की जानकारी कराती है। इसके पश्चात् वह अन्य तत्त्वों की जानकारी कराने का प्रयास विभिन्न क्रियाओं के माध्यम से करता है।

शास्त्रीय नृत्य कत्थक के अंगहार, रचनाएँ आदि क्रियाओं का संबंध पंचतत्त्व से होने के कारण इस कला का महत्व अत्यधिक है। इस नृत्य-शैली में नृत्य-रचनाओं की एक ऐसी वैज्ञानिक प्रणाली है, जिसकी साधना सही प्रकार से करने पर आनंद की प्राप्ति होती है। अंगों के संचालन से नृत्य-ध्वनियों को पदाघात द्वारा उत्पन्न कर शरीर में स्थित सूक्ष्म नारियों को प्रकृति में व्याप्त पंचतत्त्वों से सीधे जोड़ा जा सकता है।

नृत्य में पंचतत्त्व की भूमिका

मनुष्य का शरीर पाँच तत्त्वों के समीकरण से बना है। नृत्य चूंकि सम्पूर्ण शारीरिक और आंतरिक संरचना के साथ प्रकृति का सामंजस्य बनाता है इस कारण नृत्य में पंचतत्त्व की अहम भूमिका होती है।

आकाश तत्व

आकाश का प्रतीक है 'शून्य' जिसे ब्रह्म का पर्याय भी कहा गया है। नृत्य का साधक भी एक तरह से ब्रह्मज्ञानी ही होता है। इसके अन्तर्गत 'चाट' क्रिया होता है। 'चाट' पर सिद्धि प्राप्त करनेवाला शांतचित्त

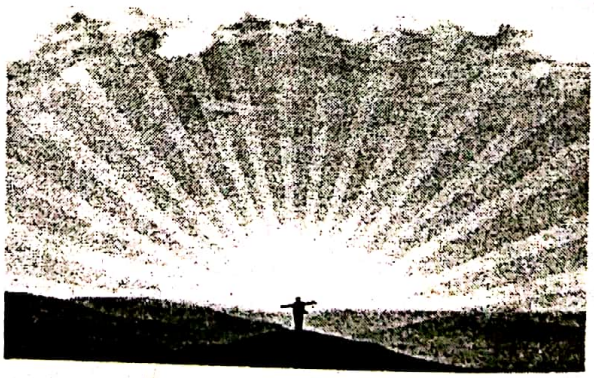

Scanned by CamScanner

और धैर्यवान होता है। एक तरह से आकाश-तत्त्व नृत्य-कला का अभिप्रेत तत्त्व है। बड़े-से-बड़े नृत्यकार और कला-चिंतक नृत्य को ब्रह्म-साधना की कला-प्रक्रिया मानते रहे हैं। इस दृष्टि से हम नृत्य के द्वारा आकाश-तत्त्व की ही साधना करते हैं।

जल-तत्त्व

नृत्य में व्यवहृत समस्त गति-क्रियाएँ इसके द्वारा निर्देशित होती हैं। जल-तत्त्व तरंगायित रेखाओं के द्वारा संचयित करता है। मनुष्य के भीतर आकर्षण (लावण्य) और सम्पूर्ण सात्त्विक भाव जल-तत्त्व के द्वारा ही नियंत्रित होता है। जल-तत्त्व का अधिपति चन्द्रमा है। चन्द्रमा के बारे में कहा गया है -**''चन्द्रमा मनसो जातः''**

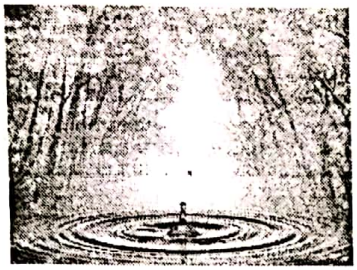

चित्त की चंचलता चन्द्र और जल का प्रधान गुण है। इससे संचालित होने वाला नृत्यकार रसिक और सौन्दर्य का उपासक होता है। नृत्यांगनाएँ जल-तत्त्व के कारण ही मन्त्रमुग्ध कर देने वाला भाव नृत्य के माध्यम से प्रदर्शित कर पाती है। इसके अन्तर्गत 'कथक' के 'गत भाव' आते हैं।

पृथ्वी-तत्त्व

नृत्य में नृत्यकार की तैयारी पृथ्वी-तत्त्व के कारण संभव होता है। इस तत्त्व का प्रतीक बिन्दु है। नृत्य में पृथ्वी-तत्त्व का चरणों की थाप से संबंध होता है, जिसके बिना नृत्य की कल्पना भी नहीं की जा सकती। साधकों के लिए इस तत्त्व की साधना का इसलिए भी विशेष महत्त्व है कि इसमें प्रियता आती है।

अग्नि-तत्त्व

नृत्य में होने के तत्त्व अग्नि-तत्त्व से संचालित होते हैं। बोल भी नृत्य के आधार-तत्त्वों में गण्य है। इस तत्त्व का प्रतीक त्रिकोण है। कठिन लय-ताल की साधना अग्नि-तत्त्व के कारण ही संभव होती है।

वायु-तत्त्व

नृत्य में 'भ्रमरी' या 'चक्कर' वायु-तत्त्व के द्वारा संचालित होती है। वायु-तत्त्व से ही नृत्यकार की सक्रियता और फुर्तीलापन बना रहता है। इस तत्त्व का

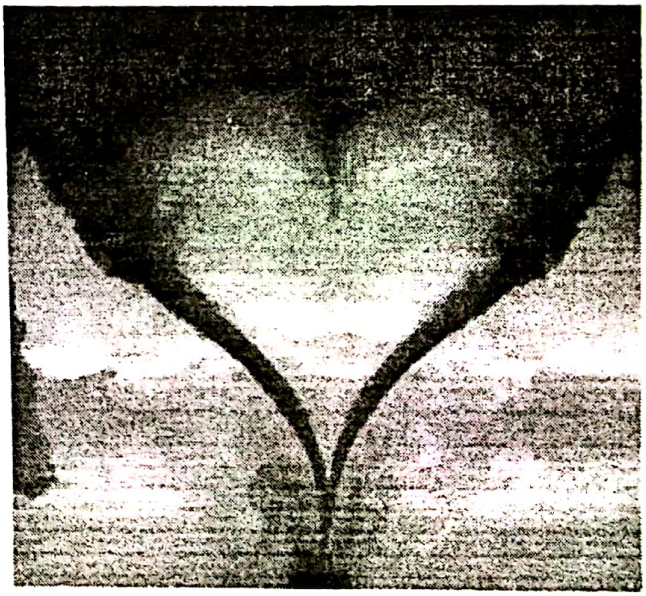

प्रतीक सीधी रेखा है।

डॉ0 जयचन्द्र शर्मा ने अपने शोधपरक लेख में कथक शैली के नृत्य में मुख्य रुप से अग्नि और पृथ्वी तत्त्वों का समाहार बताया है। उनके अनुसार कत्थक शैली में प्रमुख तत्त्व अग्नि और पृथ्वी हैं। तत्त्वों के पश्चात् नर्तक किसी एक तत्त्व की विशेष साधना कर उस पर अधिकार करता आया है। किसी कलाकार की साधना में जल-तत्त्व प्रमुख होता है तो कोई वायु-तत्त्व का साधक होता है। आकाश-तत्त्व का साधक बहुत कम नृत्यकार होते हैं। ऐसे नृत्यकार सात्विक विचारों के होते हैं और जिनका ध्येय कला के माध्यम से समाज का कल्याण करना होता है।

Scanned by CamScanner

तत्त्व-गुण-विचार

तत्त्वज्ञानियों ने इन पंच तत्वों के साथ गुणों की संख्या निर्धारित की है। आकाश-तत्त्व में एक गुण शब्द माना गया है। वायु-तत्त्वों में दो गुण-शब्द और स्पर्श। अग्नि-तत्त्व में तीन गुण-शब्द, स्पर्श और रुप। जल-तत्त्व में चार गुण होते हैं–शब्द, स्पर्श, रुप और रस। पृथ्वी-तत्त्व में पाँच गुण– शब्द, स्पर्श, रुप, रस और गंध। ये पाँचों तत्त्व अपने गुणों के माध्यम से नृत्य-कला में घटित होते हैं। नृत्य-कला में जो कुछ भी अभिव्यक्त है या तालबद्ध हैं वह सब शब्द ही है। वायु में दो गुण हैं शब्द और स्पर्श। यहाँ स्पर्श का गुण सहृदयों की चेतना या मर्मस्पर्शिता को लेकर है। अग्नि के तीन गुण शब्द और स्पर्श के साथ रुप भी हैं। यह रुप अग्नि के तेज से निर्मित होता है। शब्द के अन्तर्गत नाद की अनुभूति है। स्पर्श से रुप की अनुभूति होती है तथा रस से दृश्य की अनुभूति। आकाश और वायु जहाँ हमारे ही भीतर एक या दो प्रकार की अनुभूतियाँ कराने में सक्षम होते हैं वहीं अग्नि दृश्य की भी अनुभूति कराने में सक्षम होता है। जल तत्त्व से आस्वाद की अनुभूति जुड़ती है और हमारी रसना का स्वाद से साक्षात्कार होता है। पृथ्वी पाँच गुणों से सम्पूर्ण है। इसके द्वारा हम घ्राण की चेतना से जुड़ जाते हैं। मानव शरीर में पाँचों तत्त्वों की उपस्थिति विभिन्न स्थानों में बताई गई है। मस्तिष्क में आकाश का स्थान, जंघा में वायु का, पाँव में जल का, पेट में पृथ्वी का और छाती में अग्नि का स्थान माना गया है। ठीक उसी प्रकार नृत्य-कला में अंगों के अतिरिक्त उपांगों और प्रत्यंगों का भी विशेष महत्व है। इसमें किसी भी कपान्तक को समझाने के लिए हस्तमुद्राएं प्रयोग में लायी जाती हैं। हस्तमुद्राओं को बनाने के लिए हाथ की उँगलियों को मोड़ना, झुकाना, बन्द करना आदि क्रियाएँ की जाती हैं। नृत्यशास्त्र के अनुसार एक हाथ की कुल चौबीस हस्तमुद्राएं बनती हैं। इन मुद्राओं के विनियोग से अनेक प्रकार के भाव दर्शाये जाते हैं। हाथ की प्रत्येक उँगली से तत्व का संबंध रहता है। अंगूठा पृथ्वी का तत्त्व स्थान है। तर्जनी, आकाश का, मध्यमा, वायु का, अनामिका, अग्नि का और कनिष्ठा, जल का। कुछ विद्वान कनिष्ठा को पृथ्वी तत्त्व और अनामिका को जल तत्त्व से भी आँकते हैं। कत्थक नृत्य में अनामिका और तर्जनी का भी महत्त्व है। अराल हस्तमुद्रा का प्रयोग करते समय अंगूठा और तर्जनी का संबंध दिखाया जाता है अर्थात् आकाश और पृथ्वी तत्त्व, अंगूठा शिव है और तर्जनी पार्वती। कत्थक नृत्य की मूल संरचना में ताण्डव और लास्य का आधारभूत योग है।

कत्थक-कलाकार पदाघात द्वारा सर्वप्रथम 'त्' वर्ग की ध्वनियों को उत्पन्न करता है। 'त' वर्ग प्रमुख होने के कारण हाथ की प्रत्येक उंगली से अलग-अलग व्यंजन का संबंध माना गया है। अंगूठा से 'त' तर्जनी से 'थ' मध्यमा से 'द' अनामिका से 'ध' और कनिष्ठा से 'न' का संबंध है। हस्त में अंगूठा और तर्जनी को मिलाते हैं अंगुलियों के अनुसार 'त' और 'थ' के मेल से यह हस्तमुद्रा बनती है। दाहिने पदाघात द्वारा 'त' की ध्वनि 'ता' के रुप में उत्पन्न की जाती है और बायें पांव से थिरकन करने वाली 'थेई' की ध्वनि उत्पन्न तत्कार स्वरुप बीजमंत्र की साधना नृत्यकार करता है। बीजमंत्र की विधिवत् साधना करने पर ब्रह्म की प्राप्ति होती है।

संदर्भ सूची

1. पंचतत्व और नृत्यकला, डॉ. जयचन्द्र शर्मा, संस्कार भारती स्मारिका, राजस्थान 1992, पृ. 15.
2. एम.जे. हर्षकोवित्स के ग्रंथ, मैन एण्ड हीज वर्क्स, एलफर्ड ए. नोफ, पृ. 414, न्यूयार्क 1956.
3. The Mirror and the Lamp, I.G. Moore, p.-205.
4. कला सृजन प्रक्रिया, डॉ. शिवकरण सिंह, पृ. 180.
5. नाट्यशास्त्र, 4/3, 1/2.
6. हिन्दी नाटक और रंगमंच, डॉ. राजेश्वर प्रसाद सिंह, डॉ. वेणु राय, पृ. 27 पर उद्धृत।
7. रुद्रेणेदमुमाकृत व्यक्तिकरे स्वांगे विभक्त द्विधा, मालविकाग्निमित्रम, कालिदास, 1/4.
8. The Sanskrit Drama, Dr. Keith, p.57.
9. मनुस्मृति-1/10, महाभारत वन पर्व, 273/42.
10. संस्कृति दर्शन, डॉ. हिम्मत सिंह सिन्हा, पृ. 57.

❑❑❑

Scanned by CamScanner